शोध समस्या
(Research Problem)

किसी भी शोध की शुरूआत एक शोध समस्या की स्पष्ट पहचान से होती है। शोध समस्या का चयन करना एक अत्यन्त जटिल कार्य होता है। फिर भी वह अपने पूर्वज्ञान के आधार पर समस्या का चयन करता है। सामान्यतः शोध समस्या (Research Problem) एक ऐसी समस्या होती है जिसके द्वारा दो या दो से अधिक चरो (Variable) के बीच एक प्रश्नात्मक कथन (Interrogative relationship) की अभिव्यक्ति होती है।

करलिंगर द्वारा शोध समस्या को कुछ इसी अर्थ में परिभाषित किया गया है, ''समस्या एक ऐसा प्रश्नात्मक वाक्य या कथन होता है जो प्रश्न करता है – दो या दो से अधिक चरों के बीच कैसा सम्बन्ध है।

"A problem is an interrogative sentence or statement that asks: What relation exists between two or more variables"

यदि इस परिभाषा का विश्लेषण करे तो हम पायेंगे की शोध समस्या के कथन की कुछ विशेषताएँ है जो निम्नाकित है :–

(1) समस्या कथन की अभिव्यक्ति प्रश्नवाचन वाक्य (Interrogative Sentence) द्वारा होती है। कथन से यह भी स्पष्ट हो जाता है कि उसमे क्या पूछा जा रहा है जिसका उत्तर शोध करने के बाद ही दिया जाता है।

(2) शोध कथन द्वारा दो या दो से अधिक चरो के बीच के सम्बन्धो की अभिव्यक्ति होती है। इसका मतलब यह हुआ कि शोध समस्या मे कथन की अभिव्यक्ति करने से पहले शोधकर्ता को चरों के बारे में निर्णय लेना पड़ता है। सर्वप्रथम चरो की पहचान की जाती है उसके पश्चात् चरो के बीच एक विशेष सम्बन्ध की उक्ति की जाती है।

(3) शोध समस्या का कथन (Statement) ऐसा होना चाहिए जिसे आनुभाविक विधियो (empirical methods) से जॉच किया जाना सम्भव हो। दूसरे शब्दों में शोध समस्या का कथन ऐसा होना चाहिए कि उसके चरो (Variables) की माप ऑकड़ो (data) का संग्रह (Collection) करके किया जाना सम्भव हो सके।

(4) किसी शोध समस्या को नैतिक (Moral) मूल्यो से या निर्णयो (Judgements) से सम्बन्धित नही होना चाहिए क्योकि ऐसी शोध समस्याओ का अध्ययन करना असम्भव नही तो कठिन आवश्यक है।

(5) शोध समस्या को वैज्ञानिक (Scientific) होने के लिए यह भी आवश्यक है कि उसका सम्बन्ध महत्वपूर्व विषयो या घटनाओ से हो न तुच्छ विषयो या घटनाओ से शोध समस्या का स्वरूप ऐसा भी होना चाहिए कि उसे जॉच करने में अत्यधिक समय या धन का व्यय न हो।

(6) शोध समस्या को न तो अत्यधिक सामान्य (too general) और न ही अत्यधिक विशिष्ट (too specific) होना चाहिए। **करलिंगर** (Kerlinger 1986) ने भी कहा है ''अगर समस्या अत्यधिक सामान्य है, तो वह इतनी अस्पष्ट हो जाती है कि उसकी जॉच नही की जा सकती है। इस प्रकार से वैज्ञानिक रूप से वह अर्थहीन हो जाता है। (If the problem is too general, it is usually too vague to be tested thus it is scientifically useless) उसी तरह से यदि कोई समस्या अत्यधिक विशिष्ट (Specific) हो जाती है तो वह भी शोध के दृष्टिकोण से बेकार एवं अर्थहीन हो जाती है क्योकि ऐसी शोध समस्या के अध्ययन से अर्थपूर्ण सामान्यीकरण (Meaningful generalization) नही हो पाता है।